GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

माटी का कर्ज़ (वीर रस कविता)

अस्मी जैन

बी.एस.सी. विद्यार्थिनी - लकुलीश योग विश्वविद्यालय - अहमदाबाद

आओ, भारत के वीरों आओ
ये तिरंगा ऊंचा लहरा देना
जिस धरा पे तुमने जन्म लिया
उस माटी का कर्ज चुका देना।

रण मे हुंकार भरी राणा ने
खडग, कवच और ढाल साथ था,
पवन सा तेज़ चेतक प्रताप का
उसकी वफा का इतिहास गवा था।

शूरवीर रानी झाँसी की
आज़ादी की अलख़ जगा देना
अपने सपूत को पीठ पे लादे
गोरों के होश उड़ा देना।

जिस धरा पे तुमने जन्म लिया,
उस माटी का कर्ज़ चुका देना।
वहीं भगतसिंह, राजगुरु सुखदेव ने जान गवाई थी
उनकी कुर्बानी देख यहाँ, सबकी आँखें भर आयी थी
लाल- बाल-पाल त्रिमूर्ति का बलिदान
और सुभाष की खातिर यह रक्त जुटा देना
इस धरती माँ की आज़ादी पर
ये दिल-औ-जान लुटा देवा ।
जिस घरा पे तुमने जन्म लिया
उस माटी का कर्ज़ चुका देना।

एक त्यागी गांधी बापू की,
सोच अहिंसावादी थी
सत्याग्रह की आंधी लाए
तन ढकने को खादी थी।
अंग्रेजों को मार भगाया
हाथ में बस एक लाठी थी ।

सारथी बने एक वल्लभ भाई
उनका समर्पण याद करा देना।

https://www.gapbhasha.org/

अखण्ड भारत के लौहपुरुष
सरदार को शीश झुका देना ।
जिस धरा पे तुमने जन्म लिया
उस माटी का कर्ज चुका देना।

करो याद उन वीरों को अब
जिनकी सरहद पर जान गयी,
माँ की मिट्टी पर मरने वाले
माँओं की कोख वीरान हुई ।

जिसने सीमा पर लहू बहाया
तुम दो आँसु बहा देना,
वो शिशु को रोता छोड़ चला
अब उसका कुटुम्ब बचा लेना ।
जिस धरा पे तुमने जन्म लिया
उस माटी का कर्ज चुका देना।

अब इस नए युग की बात करें तो,
हर कदम यहाँ एक स्पर्धा है,
हथियार नहीं है पास किसके
हर कोई यहां एक योद्धा है।

क्या खाकी क्या वर्दी यहां
सभी फर्ज़ निभाते हैं,
क्या लेखक और क्या चिकित्सक
गज़ब का साहस दिखाते हैं।

हर शिक्षक और शिष्य यहां
शिक्षा की अलख जगाते हैं।
मेरे भारत के वीर सपूत
यही संदेश पहुंचते है।

यह धरती माँ है वीरों की
अपना हौंसला बुलंद दिखला देना,
आओ भारत के वीरों आओ
यह तिरंगा ऊंचा लहरा देना।
जिस धरा पे तुमने जन्म लिया
उस माटी का कर्ज़ चुका देना।
उस माटी का कर्ज़ चुका देना।

https://www.gapbhasha.org/